Media Release

उत्तर प्रदेश की माननीया राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने ईडीआईआईकी वार्षिक वी.जी. पटेल स्मृति व्याख्यानमाला को संबोधित किया

--श्रृंखला का यह तीसरा व्याख्यान वर्चुअल तौर पर किया गया आयोजित, विशिष्ट वक्ता के तौर पर उत्तर प्रदेश की माननीया राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल का उद्बोधन

--विषय था – 'उच्च शिक्षण संस्थानों में उद्यमिता शिक्षा का महत्व'

--व्याख्यान में सम्मानित अतिथि के तौर पर शामिल हुए गुजरात के माननीय शिक्षा मंत्री श्री भूपेंद्रसिंह चुडासमा, जिन्होंने स्टार्ट–अप से संबंधित प्रणाली के महत्व पर डाली रोशनी

सोमवार, 6 सितंबर, 2021: उत्तर प्रदेश की माननीया राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने आज भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (ईडीआईआई), अहमदाबाद द्वारा आयोजित डॉ वी जी पटेल स्मृति व्याख्यान दिया। श्रृंखला का यह तीसरा व्याख्यान वर्चुअल तौर पर किया गया था और इस बार की व्याख्यानमाला का विषय 'उच्च शिक्षण संस्थानों में उद्यमिता शिक्षा का महत्व' पर केंद्रित था। इस अवसर पर गुजरात के माननीय शिक्षा मंत्री श्री भूपेंद्रसिंह चुडासमा, सम्मानित अतिथि के तौर पर शामिल हुए। व्याख्यानमाला में ईडीआईआई के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला भी उपस्थित रहे।

पद्मश्री विजेता डॉ. वी. जी. पटेल ने उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए अपनी प्रतिबद्धता जताई थी और उद्यमिता समुदाय ने उन्हें 'उद्यमिता आंदोलन के जनक' के रूप में मान्यता दी थी। उद्यमिता आंदोलन के महान नेता और विचारक डॉ. वी. जी. पटेल का 2019 में निधन हो गया था। उन्होंने न केवल पूरे भारत में अपने विचारों को स्थापित करने में कामयाबी हासिल की, बल्कि 1983 में राष्ट्रीय संसाधन संस्थान- भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान (ईडीआईआई) की स्थापना भी की।

उच्च शिक्षण संस्थानों में उद्यमिता शिक्षा को मजबूत करने की आवश्यकता पर वर्चुअल दर्शकों को संबोधित करते हुए उत्तर प्रदेश की माननीया राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने कहा, "उच्च शिक्षण संस्थान छात्रों की मानसिकता को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उन्हें ऐसे पाठ्यक्रम तैयार करने और पेश करने की आवश्यकता है जो नवाचार, व्यावसायिक कौशल और उद्यमशीलता की दृष्टि से आपस में संबद्ध हों। छात्रों को व्यावसायिक कौशल और उद्यमशीलता दक्षताओं के ज्ञान से सुसज्जित करना महत्वपूर्ण है। इस तरह के मिले-जुले प्रयोग से उनके आत्मविश्वास और ज्ञान में वृद्धि होगी और इस तरह वे ऐसे उद्यम खड़े कर पाएंगे, जो व्यापक तौर पर प्रभाव पैदा करने में सफल रहेंगे।"

प्री-इनक्यूबेशन और इनक्यूबेशन सपोर्ट पर जोर देते हुए उन्होंने आगे कहा, "यह भी जरूरी है कि छात्रों को व्यावसायिक विचारों से अवगत कराया जाए और उन्हें यह पहचानने में सहयोग दिया जाए कि कौन से विचार मुख्य रूप से इंक्यूबेशन प्रक्रिया से तैयार किए जा सकते हैं। इस तरह की सलाह और मार्गदर्शन उद्यमियों को आवश्यक कौशल के लिए तैयार कर सकते हैं, जो उन्हें अपने अवसर, स्टार्ट अप को मान्य और मूल्यांकन करने और उनके व्यवसाय मॉडल को स्पष्ट रूप से परिभाषित करने में मदद कर सकते हैं।"

माननीया राज्यपाल ने अपने संबोधन में जिक्र किया कि उच्च शिक्षण संस्थानों में उद्यमिता शिक्षा शुरू करने के महत्व पर चर्चा करने के लिए भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान द्वारा हाल ही लखनऊ में आयोजित कुलपतियों की बैठक में भी उन्हें शामिल होने का अवसर मिला था और वहां उन्हें कुलपतियों की ओर से उत्साहजनक प्रतिक्रियाएं मिली थीं। उन्होंने आगे कहा कि आज आवश्यकता इस बात की है कि देश में उद्यमिता को करियर के रूप में चुनने के लिए और अधिक छात्रों को उन्मुख किया जाए।

डॉ वी जी पटेल की विरासत को आगे बढ़ाते हुए उद्यमिता शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए वार्षिक व्याख्यान श्रृंखला के आयोजन पर ईडीआईआई को बधाई देते हुए सम्मानित अतिथि गुजरात के माननीय शिक्षा मंत्री श्री भूपेंद्रसिंह चुडासमा ने उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए स्टार्ट-अप प्रणाली के संरक्षण और

संवर्धन के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा, “गुजरात उन पहले राज्यों में से एक है, जिन्होंने संस्थागत स्तर पर उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए ‘स्टूडेंट स्टार्ट-अप इनोवेशन पॉलिसी’ पेश की है। हम हर साल दो हैकथॉन भी आयोजित कर रहे हैं जहां भाग लेने वाले छात्रों को उनके विचारों के माध्यम से महत्वपूर्ण मुद्दों के समाधान खोजने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। राज्य ने गुजरात स्टार्टअप इनोवेशन हब, आई-हब की स्थापना करके एक अनुकूल प्रणाली स्थापित की है, जहां स्टार्टअप्स को नेटवर्किंग, को-वर्किंग, लैब, मेंटरशिप और फंडिंग सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। इसके अलावा, राज्य सरकार, उद्योग और युवाओं के बीच सहयोग की सुविधा प्रदान कर रही है ताकि अभिनव और दीर्घकालिक समाधानों के माध्यम से स्टार्ट-अप से संबंधित मुश्किलों को दूर किया जा सके। साथ ही, गुजरात महिला केंद्रित स्टार्टअप नीतियां शुरू करके महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने में भी सबसे आगे रहा है।”

ईडीआईआई के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला ने उद्यमिता की अवधारणा के माध्यम से राष्ट्र के आर्थिक विकास में डॉ. वी. जी. पटेल के असाधारण योगदान को याद किया। उन्होंने युवाओं को कुशल बनाने में उद्यमिता के महत्व पर जोर दिया और कहा, “युवाओं को परिवर्तन का अनुमान लगाने, शोषण करने और नेतृत्व करने के लिए कुशल और सुसज्जित होना चाहिए। उद्यमिता शिक्षा के साथ युवा अपनी शंकाओं को दूर करने और राष्ट्र को आगे बढ़ाने के लिए आत्मविश्वास विकसित करने में सक्षम होंगे। हमारे उच्च शिक्षा संस्थान उत्कृष्टता के केंद्र बन सकते हैं जहां बदलते समय के अनुरूप नए विचार हों। इन्हें ऐसे केंद्रों के रूप में विकसित किया जा सकता है, जो नए भारत के निर्माण के लिए हमारे ऐसे प्रतिभाशाली युवाओं को तैयार कर सकें, जिनके पास भरपूर नए विचार और नवाचार संबंधी आइडिया हैं।”

डॉ. शुक्ला ने डॉ. वी. जी. पटेल मेमोरियल अवार्ड फॉर एंटरप्रेन्योरशिप ट्रेनर/एजुकेटर/मेंटर 2021 के विजेताओं के नाम की घोषणा भी की।

डॉ. वी. जी. पटेल मेमोरियल अवार्ड फॉर एंटरप्रेन्योरशिप ट्रेनर/एजुकेटर/मेंटर 2021

डॉ. पटेल ने उद्यमी प्रशिक्षक-प्रेरक का एक ऐसा कैडर बनाने की भी कल्पना की, जिसके बारे में उनका मानना था कि यह उद्यमिता विकास आंदोलन को दीर्घकाल तक आगे बढ़ाने में सहायक होगा। उनकी सोच सही थी, इसलिए आज उद्यमिता के प्रचार और उसके परिणामों को दीर्घकाल तक बनाए रखने में उद्यमी प्रशिक्षक-प्रेरक प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं। उद्यमिता की दुनिया की दिग्गज हस्ती डॉ. पटेल को श्रद्धांजलि देने के लिए ईडीआईआई ने डॉ. वी. जी. पटेल मेमोरियल अवार्ड फॉर एंटरप्रेन्योरशिप ट्रेनर/एजुकेटर/मेंटर की स्थापना की है। पुरस्कार में एक प्रशस्ति पत्र और 1,00,000 रुपये का नकद पुरस्कार शामिल है। यह पुरस्कार उद्यम की स्थापना के लिए अग्रणी उद्यमिता प्रशिक्षण/शिक्षा/सलाह/ज्ञान निर्माण में उत्कृष्ट प्रदर्शन/योगदान के लिए एक पेशेवर को दिया जाता है। डॉ. वी.जी. पटेल मेमोरियल अवार्ड फॉर एंटरप्रेन्योरशिप ट्रेनर/एजुकेटर/मेंटर 2021 के लिए ईडीआईआई को पूरे भारत से 77 नामांकन प्राप्त हुए। संस्थान ने मूल्यांकन और चयन की त्रिस्तरीय प्रक्रिया का पालन किया। इस वर्ष सम्मानित जूरी ने दो लोगों को संयुक्त विजेता घोषित किया। ये हैं--

श्री सुनील चांडक, अध्यक्ष, उद्योगवर्धनी शिक्षा संस्थान, नासिक, महाराष्ट्र

समाज में महिलाओं, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति, वीआरएस कर्मचारियों, सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित वर्गों, प्रौद्योगिकीविदों और कई अन्य सहित वंचित समुदायों सहित लक्षित समूहों में उद्यमिता के प्रसार को सुनिश्चित करने के लिए 36 साल समर्पित। उनकी कुछ प्राथमिक उपलब्धियों में शामिल हैं- नासिक, महाराष्ट्र में एमआईडीसी में 2 महिला औद्योगिक क्षेत्र का निर्माण (जहां 67 महिलाओं ने अपने उद्यम स्थापित किए हैं), नासिक, महाराष्ट्र में एमआईडीसी में महिला औद्योगिक परिसर सोसायटी (जहां 16 महिलाओं ने अपना उद्यम शुरू किया है और नासिक के महिला उद्यमी संघ (डब्ल्यूईएएन) का निर्माण किया है। श्री चांडक ने नासिक में एमआईडीसी में पहली औद्योगिक परिसर सोसायटी की स्थापना की, एक मिनी मॉल (बिजनेस स्क्वायर) जिसमें 60 ईडीपी प्रतिभागियों की दुकानें शामिल हैं। इसमें बुद्धिस्ट एंटरप्रेन्योर्स

एसोसिएशन के 300 से अधिक प्रशिक्षित अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के उद्यमी शामिल हैं। दलित इंडस्ट्रीज चैंबर ऑफ कॉमर्स ऑफ इंडिया (नासिक चैप्टर) जहां अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के 30 ईडीपी सदस्य प्रतिभागी हैं और नासिक में पहली बार फूड क्लस्टर, जहां 70 से अधिक उद्यमी अपनी इकाइयां संचालित करेंगे। श्री चांडक ने कटाई के बाद मूल्यवर्धन प्रक्रिया में 1500 से अधिक कृषि उद्यमियों को भी बढ़ावा दिया, जिसके लिए महाराष्ट्र सरकार ने उन्हें 'शेतमित्र अवार्ड' देकर सम्मानित किया।

डॉ. वेंकटेश बाबू, डीन, भारत इंस्टीट्यूट ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च

अत्यंत साधारण पृष्ठभूमि से आने वाले डॉ. बाबू ने शिक्षाविदों में उद्यमिता उत्कृष्टता को सफलतापूर्वक विकसित किया है। उन्होंने 258 प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षित किया है और 156 उद्यमों का निर्माण सुनिश्चित किया है। उन्होंने विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में उद्यमों का निर्माण भी सुनिश्चित किया है। उन्होंने भारत में तकनीकी शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने की दिशा में काम किया, डीएसटी के समर्थन से भारत टेक्नोलॉजी बिजिनेस इन्क्यूबेटर की स्थापना की, नेशनल बोर्ड ऑफ एक्रडिटिशन के परिणाम आधारित एक्रडिटिशन नियमों के प्रारूप को तैयार करने में योगदान दिया, जिससे भारत को प्रतिष्ठित वाशिंगटन समझौते का पूर्ण हस्ताक्षरकर्ता बनाया जा सके।

उनके प्रयासों से सामने आने वाले परिणाम समाज के विभिन्न वर्गों, विशेषकर ग्रामीण युवाओं की सफलता को दर्शाते हैं।